मीडिया की स्वतंत्रता के लिए खड़े हो NWMI
जनवरी 30.2023 NWMI पटना घोषणा

भारत में मीडिया की स्वतंत्रता पर बढ़ते हमलों के मद्देनजर, पटना, बिहार में NWMI की 17वीं राष्ट्रीय बैठक (27–29 जनवरी 2023), पत्रकारों, मीडियाकर्मियों और जनता से प्रेस की स्वतंत्रता, नैतिक पत्रकारिता के लिए खड़े होने का आह्वान करती है।

लैंगिक समानता और सामाजिक न्याय। मीडिया को डराने और दबाने के लिए सेंसरशिप के नए रूपों को नियमित रूप से तैनात किया जा रहा है। हाल के उपायों में फर्जी खबरों पर सूचना प्रौद्योगिकी (मध्यवर्ती दिशानिर्देश और डिजिटल मीडिया आचार संहिता) नियम 2021 में मसौदा संशोधन, बीबीसी डॉक्यूमेंट्री को रोकना, पत्रकारों के समाचार के अपने स्रोतों की रक्षा के अधिकार पर कानूनी हमले और पत्रकारों के लिए सुरक्षा उपायों को हटाना शामिल है। डिजिटल पर्सनल डेटा प्रोटेक्शन बिल में। बढ़ी हुई निगरानी और सोशल मीडिया पोस्ट को हटाना सामान्य हो गया है। पत्रकारों के खिलाफ प्रेरित मामले दर्ज करना और उन्हें कैद करना अस्वीकार्य है। विशेष रूप से कश्मीर के पत्रकारों पर अघोषित यात्रा प्रतिबंधों ने उन्हें आने–जाने के उनके अधिकार से वंचित कर दिया गया है। महत्वपूर्ण मुद्दों पर लिखने और रिपोर्ट करने की उनकी स्वतंत्रता प्रतिबंधित है और घाटी में मानवाधिकारों के उल्लंघन पर रिपोर्ट करने के लिए उन्हें दंडित किया जाता है।

इस तरह के प्रतिबंध और हमले पत्रकारों के अपने पेशे का अभ्यास करने के अधिकार को खतरे में डालते हैं। **महिला पत्रकारों के खिलाफ ऑनलाइन हिंसा और उन्हें इंसाफ न देने वाली** दंडमुक्ति और कई न्यूज रूम में जहरीला काम का माहौल, कार्यस्थलों में यौन उत्पीड़न और भारत में पत्रकारों की मौजूदा अनिश्चितता, संविदात्मकता कान्ट्रेक्ट वेस के कारण असंगठित, महिला मीडिया पेशेवरों के मानवाधिकारों का उल्लंघन करती है जिसमें आजीविका का मौलिक

अधिकार भी शामिल है इस कारण महिला पत्रकारों को नेतृत्व के पदों पर रोजगार तक पहुंच और वेतन में असमानता की चुनौती का सामना करना पड़ रहा है

बिहार हमेसा से सामाजिक न्याय के लिए ऐतिहासिक संघर्षों का स्थल रहा है, जिसमें विशेष रूप से हाशिए के समुदायों की महिलाओं ने सक्रिय भूमिका निभाई है, साथ ही साथ मीडिया की स्वतंत्रता के लिए, जैसा कि 1982 के बिहार प्रेस बिल के खिलाफ सफल विरोध से स्पष्ट था। इसलिए यह और भी निराशाजनक है कि बिहार में आज भी मीडिया में महिलाओं की संख्या नगण्य है। पितृसत्ता, जाति, वर्ग, जनजाति, धर्म, विकलांगता और ऐसे अन्य कारकों के कारण बहिष्करण 21 वीं सदी में पूरी तरह से अलोकतांत्रिक और असहनीय है। इस रवैये के कारण पक्षपातपूर्ण मीडिया द्वारा खुले तौर पर नफरत फैलाने वाली रिपोर्ट ने स्थिति को और खराब कर दिया है, देश को हिंसा, अनिश्चितता और अराजकता के भंवर में डुबो दिया है।

आज विरोध के स्वरों का गला घोंटा जा रहा है और जन आंदोलनों को अपराधी बना दिया गया है। समाज के सीमांत वर्गों को विस्थापित किया जाता है और उनके प्राकृतिक संसाधनों को नष्ट कर दिया जाता है, जिससे वे पहले से कहीं अधिक शक्तिहीन हो जाते हैं।

NWMI की 17वीं राष्ट्रीय बैठक का फोकस ''मीडिया, लिंग और सामाजिक न्यायः एक समतामूलक समाज की ओर'' था।कश्मीर से केरल, नागालैंड और असम से लेकर उड़ीसा और महाराष्ट्र तक 20 से अधिक राज्यों का प्रतिनिधित्व करने वाली और कई भाषाओं में काम करने वाली सौ से अधिक मीडिया महिलाएं, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, चुनौतियों और अवसरों से संबंधित मुद्दों पर चर्चा करने के लिए जनवरी 2023 में पटना में एकत्रित हुईं। यह अपने आप में ऐतिहासिक है।

क्षेत्रीय मीडिया, लिंग, जाति, अक्षमता आदि के आधार पर मीडिया में हाशियाकरण और बहिष्कार, और ऑनलाइन दुर्व्यवहार और डिजिटल सुरक्षा को

लेकर ''सामाजिक न्याय और बिहार मॉडल के साथ प्रयोग'' पर एक विशेष सत्र ''पिछड़े'' राज्य के रूप में वर्गीकृत राज्य में शासन के ऐतिहासिक और वर्तमान स्वरूप पर आधारित था, जिसमें शराबबंदी जैसी नीतियों को पहलों के औचित्य और प्रभाव पर विशेष ध्यान दिया गया था। जैसे महिलाओं के लिए आरक्षण और अन्य लागू सुविधाएं, साथ ही जाति जनगणना भी इसी तरह एक स्वरूप है।

आर्यभट्ट नॉलेज यूनिवर्सिटी में आयोजित राष्ट्रीय बैठक, नेटवर्क के लिए एकजुटता को मजबूत करने और मीडिया की स्वतंत्रता और मीडिया कर्मियों के अधिकारों को बनाए रखने के लिए हमारी जिम्मेदारी और प्रतिबद्धता की भी पुष्टि करने के साथ–साथ उन शक्तियों को एकजुट रखने का एक सुनहरा अवसर था जो हमारे लिए भी जवाबदेह हैं।